RESEARCH REVIEW JOURNALS
Volume-04
Issue-04
April-2019

ISSN: 2455-3085 (Online)
RESEARCH REVIEW International Journal of Multidisciplinary
www.rrjournals.com[UGC Listed Journal]

वाल्मीकि रामायणकालीन भारतीय समाज

रचना

शोधार्थी, वाल्मीकि रामायणकालीन भारतीय समाज, दक्षिण भारत हिन्दी प्रचार सभा, मद्रास

ARTICLE DETAILS

Article History
Published Online: 15 April 2019

Keywords

रामायण, भारतीय समाज, संस्कृति

ABSTRACT

साहित्य समाज का प्रतिबिम्ब होता है। रामायण के संदर्भ में भी यह बात सटीक बैठती है। वाल्मीकि कृत रामायण में तत्कालीन अथवा रामायणकालीन समाज में अनेक ऐसे प्रसंग आते हैं जिन्हें भारतीय समाज के संदर्भ में विश्लेषित करें तो वे मूलतः भारतीय समाज के ही हैं। विभिन्न प्रकार की लोक–प्रथाएँ, गीत, संस्कार, त्योहार आदि, जिनका वर्णन वाल्मीकि रामायण में हुआ है, वे सभी भारतीय समाज की ही पहचान एवं प्रतीक हैं।

प्रस्तावना :–

''साहित्य का कर्त्ता व्यक्ति होता है और व्यक्ति समाज का अंग होता है और वह समाज से ही साहित्य सृजन की प्रेरणा एवं सामग्री ग्रहण करता है। साहित्यकार चाहे अथवा न चाहे, वह समाज द्वारा प्रभावित होता ही रहता है। जीवन और साहित्य की प्रेरणाएँ समान होती हैं। वे पुरुषार्थ चतुष्टय तथा तीन ऐषणाओं में समाहित हो जाती है। साहित्य मानव–जीवन के सुख–दुख, हर्ष–विषाद एवं आकर्षण–विकर्षण के ताने–बाने से निर्मित होता है और उसमें मानव की आत्मा का स्पन्दन प्रतिफलित होता है।''[1] महर्षि वाल्मीकि की आत्मा का स्पंदन उनके द्वारा विरचित प्रसिद्ध महाकाव्य रामायण में पग–पग पर हुआ है और उन्होंने भारतीय तत्कालीन समाज की वास्तविक झांकी इस महाकाव्य में प्रस्तुत की है वैसे तो सभी साहित्यकार समाज द्वारा प्रभावित भी होते हैं और वे समाज को प्रभावित भी करते हैं। विश्व में होने वाले आंदोलनों के मूल में साहित्यकारों की वाणी ही रही है। आप किसी क्रांति के इतिहास पर विचार करके देख लीजिए। उसकी मूल प्रेरणा साहित्य की प्रेरक रचनाएँ ही दिखाई देंगी। अपनी इन प्रेरक रचनाओं के कारण ही तुलसी, रूसो, कार्ल मार्क्स, गोर्की, प्रेमचन्द आदि साहित्यकार अमरत्व को प्राप्त हुए हैं। साहित्य के अन्तर्गत समाज की विभिन्न स्थितियों, परिस्थितियों और उसके आचार–विचारों एवं व्यावहारों का मिश्रण रहता है। साथ ही साहित्य समाज को संस्कार की प्रेरणा प्रदान करता है।

रामायण हमारी संस्कृति और समाज की प्रतिच्छाया है। किसी सभा, समुदाय या समाज में उठने बैठने तथा रहने योग्य मनुष्य को सभ्य कहा जाता है। उसी भाव को सभ्यता कहते हैं। सभ्यता हमारा बाह्य रहन–सहन, खान–पान, आचरण भौतिक विकास, पारिवारिक सामाजिक संस्कार आदि का परिचायक होता है। संस्कृति हमारी आंतरिक सोच, ज्ञान–विज्ञान आदि प्रेरक तत्त्वों को दर्शाती है। वैसे देखा जाए तो आंतरिक आचरण ही बाह्य आचरण का कारण होता है। रामायण में भारतीय संस्कृति की झलक बखूबी मिलती है, न केवल झलक बल्कि सम्पूर्ण ग्रंथ ही भारतीय संस्कृति का परिचायक है। रामायण के विषय में कहा भी गया है –

यावत् स्थास्यन्ति गिरयः सरितश्च महीतले।
तावत् रामायण कथा लोकेषु प्रचरिस्यति।

काव्य का प्रयोजन होता है – रामादिवत् प्रवर्तितव्यम् न रावणादिवत् अर्थात् हमें श्रेष्ठ पुरूषों राम आदि के समान आचरण करना चाहिए रावण आदि के समान नहीं।

उपरोक्त विचार भारतीय संस्कृति की विशेषता है जिनका निर्वाह सम्पूर्ण ग्रंथ में बखूबी दर्शनीय है। इस शोध पत्र में ऐसी बहुत सारी बातों को विश्लेषित करेंगे जो रामायण में भारतीय समाज के स्वरूप को प्रदर्शित करने वाली हैं –

संयुक्त परिवार प्रणाली :–

''रामायण काल में संयुक्त परिवार प्रणाली का प्रचार था। परिवार का मुखिया पिता होता था तथा परिवार के अन्य समस्त प्राणी उसकी आज्ञा का पालन करते थे। यद्यपि पत्नी गृह की संचालिका होती थी तथा गृह में उसकी सत्ता सर्वोपरि मानी गई थी, किन्तु फिर भी अपने पति के अधीन होती थी।''[2] संतान का परम कर्तव्य था अपने माता–पिता की आज्ञा का पालन करना। माता–पिता का परिवार में समान स्थान था इसी महत्व के आधार पर कौशल्या ने राम से कहा था – ''जिस गौरव से राजा तुम्हारे पूज्य हैं, उसी गौरव से मैं भी पूज्य हूँ। अतः मैं तुमको मना नहीं कर रही हूँ कि तुम वन मत जाओ।''[3]

यदैव राजा पूज्यस्ते गौरवेण तथा त्वां नाहं नानुजानमि न गन्तव्यमितो वनम्।

RRIJM 2015, All Rights Reserved

गृह में प्रमुख प्रभुता रखते हुए भी पत्नी का परम धर्म अपने परिवार की परम्पराओं और मर्यादाओं की रक्षा करना था। अपने इसी धर्म का परित्याग कर देने के कारण कैकेयी कुलघातीनी आदि शब्दों की पात्र बनी। गृह प्रबंध के साथ ही अपने गुणों के आधार पर पति के मन पर अपना पूरा अधिकार रखती थी।[4] वस्तुतः आदर्श पत्नी वही मानी जाती थी जिसमें दासी, सखी, पत्नी, भगिनी एवं माता इन समस्त रूपों का समावेश हो।[5]

यदा यदा च कौशल्या दासीव च स भार्यावद् भगिनीवच्च मातृवच्चोपतिष्ठति।

नारी का स्थान सम्मानीय :–

नारी अपने सदाचरण से ही अपने आपको वन्दनीया, सम्माननीया बनाती है। सती अनुसूया का सदाचार पतिव्रत इतना उत्कृष्ट है कि वे सर्ववन्दनीया थी। इसी प्रकार शबरी हीन जाति की होते हुए भी भक्ति भावना के कारण ऋषियों द्वारा सम्मानित हुई।[6] सीता का चारित्रिक महात्मय इतना महान था कि वे जगजननी सीता कहलाई। विवाह का आधार प्रीति ही था, राम–सीता के दाम्पत्य को आदर्श बनाने वाली परस्पर प्रति अनन्यता, संवेदना, परस्पर सुख दुःख अनुभव ही है।[7] गृहस्थाश्रम में धर्म, अर्थ तथा काम का संतुलन बनाए रखना आवश्यक था।[8]

सतीत्व धर्म सर्वोपरि :–

अशोक वाटिका में रावण ने सीता को भांति–भांति के प्रलोभन दिए किन्तु पतिव्रता सीता ने रावण को धिक्कारते हुए गर्जना कि मैं पुरूषसिंह रामचन्द्र के अनुकूल रहने वाली उनकी पत्नी हूँ तू गीदड़ होकर मुझे छूना चाहता है, जिस प्रकार सूर्य की प्रभा को छुआ नहीं जा सकता उसी प्रकार तू भी मुझे छू नहीं सकता।[9] सीता ने कहा था दीन हो या राजच्युत, पति ही मेरा गुरू है।[10] चन्द्रमा का उष्ण अग्नि का शीतल होना और सतीत्व पथ पर अटल थी। अपने सतीत्व के प्रभाव से सीता ने हनुमान की पूछ की अग्नि को शांत कर दिया।

माता के रूप में सर्वोच्च नारी :–

प्रत्येक काल अथवा शास्त्र में सामाजिक अथवा नैतिक सभी दृष्टियों से माता के रूप में नारी का सर्वोच्च मातृत्व है। माँ बनकर ही वह जननी, जाया और यात्री कहलाती है। संतान के चरित्र निर्माण की मूलाधार माता ही मानी जाती थी, पिता नही। माता पुत्र के संबंध गौ–वत्स प्रेम के समान महत्वपूर्ण थे। कौशल्या राम का अनुगमन के वत्सानुगमिता गौ की भांति उद्यत हो गयी थी। किन्तु फिर भी नारी के लिए पति तथा पुत्र के मध्य पति प्रेम को ही प्रधानता प्राप्त हुई। सुमंत्र ने कैकेयी से कहा था कि करोड़ो पुत्रों से भी पति अधिक महत्त्वशाली है।[11]

रामायणकालीन सामाजिक पृष्ठभूमि :–

प्रत्येक व्यक्ति अपने ज्ञान एवं विचार के अनुरूप ही आचरण करता है और जैसा करता है वैसा ही बन जाता है। जीवन का यही सूत्र है। महर्षि वाल्मीकि ने रामायण के माध्यम से मानव जीवन या मानव सभ्यता के विकास में अपेक्षित सभी गुणों की आवश्यकताओं की चर्चा की है, जिसकी विश्व की प्रत्येक सभ्यता को सदा आवश्यकता रहेगी। कुछ विचारणीय बिन्दु निम्न हैं –

रामायण में वर्णित रामराज्य की समस्त प्रजा वेदज्ञ थी। ज्ञान सम्पन्न शूरवीर संसार के कल्याण में संलग्न तथा समस्त मानवीय गुणों जैसे दया, सत्यपरता, पवित्रता, उदारता आदि से युक्त थे।

सर्वे वेदविदः शूराः सर्वे लोकहिते रताः सर्वे ज्ञानोपसम्पन्नाः समुदिता गुणैः।''[12]

समाज के सभी वर्ण ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य तथा शूद्र एक दूसरे को सहयोग करते रहते थे। जाति भेद या वर्ण भेद की दूषित भावना नहीं थी। सभी को समान अधिकार तथा न्याय प्राप्त होता था इसलिए कि भारतीय समाज एवं संस्कृति की सबसे प्रमुख विशेषता समन्वयवादिता है।

ब्रह्मक्षत्रमह्विसन्तस्ते कोशं संपूरयन् सुतीक्ष्णदण्डाः संप्रेक्ष्य पुरूषस्या बलाबलम्।।

रामायण एक ऐसे सभ्य एवं स्वस्थ समाज के निर्माण का संदेश देता है जिस समाज में धार्मिक न्यायप्रिय राजाओं के सुशासन में संपूर्ण समाज धन–धान्य से युक्त हो सभी गौ आदि पशु समृद्ध, अश्वादि आशुगामी वाहनों से युक्त तथा कोई भी निर्धन न हो ; क्योंकि ''सर्वे भवन्तु सुखिनः, सर्वे सन्तु निरामयाः'' इस नीति की उक्ति भी भारतीय सामाजिक संस्कृति की प्रमुख पहचान है।

''धेनु'' सदनं रयीणाम् अर्थात् गाय सर्वाधिक धन समृद्धि की खान है जिसे भारतीय सामाजिक संस्कृति में भी पशुओं में सर्वोच्च स्थान दिया गया है तथा इसकी पूजादि का भी विधान है। प्राकृतिक एवं शुद्ध गौ वंश की रक्षा कर हम मानव सभ्यता एवं भारतीय संस्कृति को स्वस्थ एवं दीर्घायु कर सकते हैं।

रामायणकालीन भारतीय समाज की सभ्यता एवं संस्कृति का वर्णन करते हुए वाल्मीकि मुनि जी कहते हैं कि – ''अयोध्या नगरी में कोई नर–नारी, कामी, कंदर्प, निष्ठुर, मूर्ख और नास्तिक नहीं था। सभी नर–नारी धार्मिक, जितेन्द्रिय महर्षियों के समान सच्चरित्र एवं शालीन थे। कोई क्षुध वृत्ति

वाला या चोर नहीं था। सभी अहिंसा एवं यम नियमों का पालन करने वाले एवं दानी थे। कोई भी व्यक्ति पागल, तनावग्रस्त या व्यथित मन वाला नहीं था। सभी पुत्र पौत्र सहित आनंदपूर्वक जीवन व्यतीत करते थे। इस प्रकार ग्रंथ में वर्णित तत्कालीन समाज की सभ्यता का चित्रण हमें उस तरह का एक समृद्ध, सुखी, ज्ञानवान, शीलवान एवं धार्मिक मानव सभ्यता एवं संस्कृति की महत्ता को बताता है जो हमारी भारतीय सामाजिक संस्कृति के सर्वथा अनुकूल है।

विभिन्न सामाजिक संस्कारों का वर्णन :–

एक सभ्य मनुष्य एवं समाज तथा विश्व के निर्माण के लिए सोलह संस्कारों (जन्म से लेकर मृत्यु पर्यन्त) की मानव जीवन में अत्यंत महत्ता है। जिन कर्मों से मानव जीवन में हम लोग उत्कृष्ट गुणों का आधान कर सकें उसे संस्कार कहते हैं। वैदिक सूत्रों में इनका विस्तारपूर्वक वर्णन मिलता है। यदि हम मनुष्य को श्रेष्ठ बनाना चाहते हैं तो प्रत्येक व्यक्ति का संस्कार करना आवश्यक है। सच्चे अर्थों में एक श्रेष्ठ व्यक्ति ही एक सभ्य मनुष्य कहलाने का अधिकारी होता है और तभी सभ्य मनुष्यों से ही श्रेष्ठ, सभ्यता का निर्माण होता है। रामायण में गर्भधारण से लेकर पुंसवन, जातिकर्म तथा नामकरण आदि संस्कारों का उल्लेख मिलता है। जैसे बालकाण्ड में राम–लक्ष्मणादि चारों बालकों का नामकरण संस्कार महर्षि वशिष्ठ द्वारा होता है। अपने प्रियजनों के सार्थक नाम रखना भी हमारी भारतीय समाज की संस्कृति के अनुकूल है।

पंच यज्ञ परम्परा :–

वाल्मीकि कृत रामायण में पांच यज्ञ करने की परम्परा का भी विधान है। वैदिक संस्कृति में ब्रह्म यज्ञ, देव यज्ञ, पितृ यज्ञ, अतिथि यज्ञ तथा बलि वैश्व देव यज्ञ को पाँच महायज्ञ के नाम से जाना जाता है। यज्ञ समस्त विश्व को एक सूत्र में बांधकर रखने वाला एवं परोपकार और सर्वविध सुख समृद्धि तथा शांति प्रदान करने वाला होता है। अतः संस्कृति अनुसार ये पाँच यज्ञ प्रत्येक व्यक्ति को करने चाहिएँ। इस प्रकार पंच यज्ञ परम्परा भी भारतीय समाज को प्रतिबिम्बित करती है।

पारिवारिक आदर्श :–

रामायण में पारिवारिक जीवन का एक उच्च आदर्श प्रतिपादित है जो सर्वविदित है। सामाजिक एवं पारिवारिक संबंधों का जो आदर्श इस ग्रंथ में प्रस्तुत किया गया है अन्यत्र किसी में नहीं। राम एक आदर्श पुत्र है जो पिता की आज्ञा को शिरोधार्य करना अपना परम कर्त्तव्य मानते हैं। सीता राजभवन का ऐश्वर्य त्याग कर पतिव्रत धर्म का पालन करने के लिए श्रीराम के साथ अरण्य में जाती है। लक्ष्मण भी भाई एवं भाभी की सेवार्थ राज सुख को त्यागकर उनके अनुगामी बनते हैं। जब रावण छलपूर्वक सीता को हरण कर ले जाता है तब लक्ष्मण भी वन में भटक रहे थे। तभी मार्ग में उन्हें आभूषण मिलते हैं, जो माता सीता के थे। राम के पूछने पर लक्ष्मण कहते हैं कि प्रभु मैं अन्य आभूषणों को नहीं पहचानता केवल बिछुओं को पहचानता हूँ क्योंकि जब मैं भाभी सीता के चरण स्पर्श करता था तो सदैव चरणों को ही देखता था। भरत राजसत्ता पाकर भी भाईयों के बिना स्वयं को अधूरा समझता है। वह अपने अग्रज श्रीराम की खड़ाऊँ सिहांसन पर रखकर राजकाज संभालता है। कौशल्या एक आदर्श माता है। कैकेयी द्वारा किए गए अन्याय को भुलाकर वह कैकेयी पुत्र भरत पर उतनी ही ममता रखती है जितनी राम पर। हनुमान एक आदर्श भक्त हैं। वे राम की निःस्वार्थ सेवा के लिए अनुचर के समान सदैव तत्पर रहते हैं। शक्तिबाण से मूर्छित लक्ष्मण को उनकी सेवा के कारण ही प्राणदान मिलता है। उपरोक्त सभी बातें हमारे भारतीय समाज और संस्कृति के विधान हैं।

नारी वर्णन में भारतीय समाज संस्कृति दर्शन :–

हमारे समाज में स्त्रियों को सम्मान की दृष्टि से देखा जाता है। यही भाव वर्णित ग्रंथ में भी देखने को मिलता है। कौशल्या, सीता, अनसूया, तारा, मंदोदरी आदि उदात्त एवं पवित्र चरित्र को त्याग एवं बलिदान की प्रतिमूर्ति है सर्वथा हमारी संस्कृति के अनुकूल है।

उत्सवों एवं मंगलाचारणों का वर्णन में भारतीय समाज के दर्शन :–

रामायण में महर्षि जी ने विभिन्न उत्सवों एवं त्योहारों का वर्णन किया है जो हमारी संस्कृति की झलक है। ग्रामीण महिलाओं के द्वारा मंगलगान एवं मंगलाचरणों का वर्णन किया गया है जो हमारी संस्कृति की अनोखी पहचान है। सीता–राम के विवाह के अवसर पर सखियों एवं महिलाओं का परस्पर चटकीली बातें करना, हास–परिहास करना, मंगल गालियाँ आदि देना हमारी सांस्कृतिक विरासत है जिसको कवि ने बखूबी सहेज कर रखा है।

निष्कर्ष :–

रामायण भारतीय समाज का मूल स्रोत है। यह भारतीय संस्कृति का आधार है। यह एक ऐसा ग्रंथ अथवा विषय है जिस पर सैंकड़ों वर्षों से ग्रंथ एवं टीकाएँ लिखी जा रही हैं। यह ग्रंथ भारत के अलावा विश्व की विभिन्न भाषाओं में लिखा गया है। साहित्यिक रचनाओं का उपजीव्य आधार के रूप में रामायण आज भी समस्त भारतीय भाषाओं के लिए अक्षयकोष है। इसके साथ–साथ रामायण हमारी राष्ट्रीय अस्मिता और सांस्कृतिक चेतना का निर्विकल्प आश्रय भी है। रामायण में तत्कालीन समाज के रीति–रिवाजों और शासन पद्धति (राम राज्य) का वर्णन किया गया है। शाश्वत मूल्यों के विकास में इसकी महत्ता आज भी उतनी ही है जितनी प्राचीनकाल में थी। रामायण की रचना मानव जीवन के सर्वांगीण विकास एवं शाश्वत जीवन मूल्यों को प्रेरित करने

RRIJM 2015, All Rights Reserved

वाली है। ये जीवन मूल्य हमारे सांस्कृतिक मूल्य भी हैं। इस प्रकार संपूर्ण ग्रंथ हमारे सांस्कृतिक मूल्यों से ओत–प्रोत हैं। ग्रंथ में भारतीय समाज एवं संस्कृति की छटा सर्वत्र विद्यमान है।

सन्दर्भ ग्रंथ सूची :–

1. डॉ. गणपतिचन्द्र गुप्त, साहित्यिक निबंध, पृष्ठ संख्या – 31
2. वाल्मीकि रामायण 2, 20, 34
3. वाल्मीकि रामायण 2, 21, 25
4. वाल्मीकि रामायण 2, 48, 06
5. वाल्मीकि रामायण 2, 12, 68, 69
6. वाल्मीकि रामायण 6, 114, 27, 6, 118, 20
7. वाल्मीकि रामायण 2, 27, 20, 21
8. वाल्मीकि रामायण 4, 38, 20, 21
9. वाल्मीकि रामायण 5, 20, 15, 5, 21, 16
10. वाल्मीकि रामायण 5, 24, 9, 12
11. वाल्मीकि रामायण 1, 77, 26
12. बालकाण्ड, वाल्मीकि रामायण 18, 25

RRIJM 2015, All Rights Reserved